# जानकी देवी बजाज राजकीय कन्या महाविद्यालय कोटा

## जनजातियों और आदिवासियों का ज्ञान औषधीय पादपों के संरक्षण में सहायक

दिनांक 1.10.2022 को जानकी देवी बजाज राजकीय कन्या महाविद्यालय कोटा में आई क्यू ए सी तथा जे सी बोस स्नातकोत्तर परिषद वनस्पति शास्त्र विभाग के संयुक्त तत्वावधान में प्रास्पेक्टस ऑफ इथनोबॉटनी विषय पर विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता जिवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर के प्रोफेसर अशोक कुमार जैन ने भारत के समृद्ध वानस्पतिक संसाधनों के बारे में छात्राओं को जानकारी दी। भारत एक जैवविविधता धनी देश है जहां 15000 आवृतबीजी पादप पाए जाते हैं जो कि कुल आवृतबीजी का 6% है। पिछले कुछ सालों में लगभग 159 औषधीय पादप विलुप्त हो चुके हैं। प्रो अशोक कुमार जैन ने वर्तमान में औषधीय पौधों के संरक्षण की आवश्यकता पर विशेष बल दिया तथा आदिवासी व जनजातियों के योगदान को भी प्रकाश डाला। ए आई सी आर पी ई, 1999 की रिपोर्ट के अनुसार भारत के सुदूर जानजातियों द्वारा लगभग 9500 पेड़ पौधों को औषधीय संसाधन, 3900 पौधों को भोजन के रूप में प्रयोग करते हैं । इसलिए जनजातियों के ज्ञान को औषधीय पादपों के संरक्षण में उपयोग किया जाना चाहिए।

विभागाध्यक्ष डॉ प्रतिमा श्रीवास्तव ने प्रो जैन का स्वागत किया, डॉ शुचिता जैन ने प्रो जैन का परिचय करवाया। डॉ नीतिका सिंह ने कार्यक्रम में उपस्थित छात्राओं और संकाय सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित किया। प्राचार्य डॉ संजय भार्गव ने छात्राओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि ऐसे शैक्षणिक गतिविधियां छात्राओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस अवसर पर डॉ पूनम जायसवाल, श्रीमती अनीता मालव तथा अन्य महाविद्यालयों से पधारे संकाय सदस्य भी उपस्थित रहे।

# पिछले कुछ वर्षों में 159 औषधीय पौधे विलुप्त हुए

## जेडीबी कॉलेज में जनजातियों और आदिवासियों का ज्ञान औषधीय पादपों के संरक्षण में सहायक

**संदेश न्यूज। कोटा.**

जानकी देवी बजाज राजकीय कन्या महाविद्यालय कोटा में आईक्यूएसी तथा जेसी बोस स्नातकोत्तर परिषद वनस्पति शास्त्र विभाग के संयुक्त तत्वावधान में प्रास्पेक्टस ऑफ इथनोबॉटनी विषय पर विस्तार व्याख्यान का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता जिवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर के प्रो.अशोक कुमार जैन ने भारत के समृद्ध वानस्पतिक संसाधनों के बारे में छात्राओं को जानकारी दी। भारत एक जैवविविधता धनी देश है जहां 15 हजार आवृतबीजी पादप पाए जाते हैं जो कि कुल आवृतबीजी का 6% है। पिछले कुछ सालों में लगभग 159 औषधीय पादप विलुप्त हो चुके हैं। 1999 की रिपोर्ट के अनुसार भारत के सुदूर जानजातियों द्वारा लगभग 9500 पेड़ पौधों को औषधीय संसाधन, 3900 पौधों को भोजन के रूप में प्रयोग करते हैं। जनजातियों के ज्ञान को औषधीय पादपों के संरक्षण में उपयोग किया जाना चाहिए।

विभागाध्यक्ष डॉ. प्रतिमा श्रीवास्तव ने प्रो जैन का स्वागत किया। डॉ शुचिता जैन ने प्रो जैन का परिचय करवाया। डॉ नीतिका सिंह ने कार्यक्रम में उपस्थित छात्राओं और संकाय सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित किया। प्राचार्य डॉ संजय भार्गव ने छात्राओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि ऐसे शैक्षणिक गतिविधियां छात्राओं के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

# औषधीय पौधों के संरक्षण में आदिवासियों का ज्ञान महत्वपूर्ण

**नवज्योति/कोटा।** जेडीबी साइंस कॉलेज में शनिवार को वनस्पति शास्त्र विभाग के आईक्यूएसी व जेसी बोस स्नातकोत्तर परिषद के संयुक्त तत्वावधान में प्रास्पेक्टस आॅफ इथनोबॉटनी विषय पर व्याख्यान आयोजित हुआ। मुख्य वक्ता जिवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर के प्रोफेसर अशोक कुमार जैन ने वनस्पतिक संसाधनों की छात्राओं को जानकारी दी। उन्होंने कहा कि भारत जैवविविधता से धनी देश है। जहां 15 हजार आवृतबीजी पौधे पाए जाते हैं, जो कुल आवृतबीजी का 6 प्रतिशत है। पिछले कुछ सालों में लगभग 159 औषधीय पौधे विलुप्त हो चुके हैं। प्रो. जैन ने कहा कि वर्तमान में औषधीय पौधों का संरक्षण किए जाने की जरूरत है। आईसीआरपीई 1999 की रिपोर्ट के अनुसार देश में आदिवासी व जनजातियों द्वारा करीब 9500 पेड़-पौधों को औषधीय संसाधन व 3900 पौधों का भोजन के रूप में उपयोग करते थे। ऐसे में जनजातियों के ज्ञान को औषधीय पौधों के संरक्षण में उपयोग किया जाना चाहिए। विभागाध्यक्ष डॉ. प्रतिमा श्रीवास्तव ने अतिथियों का स्वागत किया। इस मौके पर डॉ. शुचिता जैन, डॉ. नीतिका सिंह, प्राचार्य डॉ. संजय भार्गव, डॉ पूनम जायसवाल, अनीता मालव सहित कई छात्राएं उपस्थित रहीं।

प्राचार्य